BA(H) Part -I, Paper -II

Dr. Gautam kumar
Guest Teacher
Department of Political science,
A.N.D College, Shahpur Patory, Sam.

बाल गंगाधर तिलक का राजनीतिक चिंतन

बाल गंगाधर तिलक अपने समय के सर्वोच्च राष्ट्रवादी एवं प्रखर प्रवक्ता थे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन देश के लिए न्यौछावर कर दिया। बाल गंगाधर तिलक के राजनीतिक चिंतन को निम्नलिखित रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है:-

1.भारतीय राष्ट्रवाद के प्रणेता/जनक – बाल गंगाधर तिलक का राष्ट्रवादी चिंतन भारतीय संस्कृति की गरिमामय छवि और उसके द्वारा प्रदत्त लोककल्याणकारी जीवन मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने भारत की प्राचीन संस्कृति और जीवन मूल्यों को भारतीय राष्ट्रवाद का आधार बनाया। भारत में राष्ट्रीयता के संचार के लिए उन्होंने पश्चिमी मूल्यों, विचार और संस्थाओं को प्रेरक शक्ति मानना अस्वीकार किया और यह स्पष्ट किया कि जब तक भारतीय अपनी प्राचीन संस्कृति और जीवन मूल्यों के प्रति गौरव की अनुभूति से ओतप्रोत नहीं होंगे, तब तक उन में विदेशी शासन की अधीनता के कारण आयी हीन भावना का निराकरण नहीं होगा।
बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय संस्कृति को राष्ट्रवाद का आधार बनाया लेकिन उनका राष्ट्रवाद सकीर्ण सांप्रदायिक मान्यताओं पर आधारित नहीं था। बाल गंगाधर तिलक ने स्वीकार किया कि भारत में राष्ट्रीयता का विकास सभी धर्मों, जातियों, साम्प्रदायों के लोगों के बीच पारस्परिक सौहार्द और विश्वास के आधार पर विकसित सहयोग की भावना से ही सम्भव है। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच पारस्परिक अस्तित्व की भावना का समर्थन किया तथा अंग्रेजों के द्वारा दोनों समुदायों के बीच विद्वेष और अविश्वास उत्पन्न करने की नीति का विरोध किया। उन्होंने ब्रिटिश शासकों की " फुट डालो और राज करो" की नीति का कड़ा विरोध किया। बाल गंगाधर तिलक द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवाद का स्वरूप, समग्र राष्ट्रवाद का स्वरूप था।

2. स्वराज्य की मौलिक अवधारणा का प्रतिपादन – बाल गंगाधर तिलक स्वराज

को प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार मानते थे। तिलक ने स्वराज की एक मौलिक अवधारणा को प्रस्तुत किया। तिलक द्वारा स्वराज्य आधारित प्रतिपादित "धर्मराज्य" उनकी सम्रग राष्ट्रवाद की अवधारणा पर आधारित था। उनके लिए स्वराज्य का अर्थ - विदेशी शासन से मुक्ति मात्र नहीं था बल्कि विदेशी शासन से मुक्ति उनके लिए स्वराज्य का प्रारंभिक चरण था। उन्होंने स्वराज्य को ऐसी संकल्पना के रुप में प्रस्तुत किया जिसमें जनता का, प्रशासन के सभी निकायों पर प्रभावशाली नियंत्रण हो और राजनीतिक शक्ति व संस्थाओं का उपयोग जनता के कल्याण के लिए किया जाता हो। तिलक के स्वराज्य की नैतिक धारणा में उदारवादियों की भाँति ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन शासन और प्रशासन में भारतीयों को अधिकतम भागीदारी का भाव निहित नहीं था। मधुकर श्याम चतुर्वेदी के अनुसार, "तिलक के स्वराज्य की अवधारणा में प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतक का मर्म निहित था। जिस प्रकार प्राचीन भारतीय आचार्यों ने धर्म की मूल प्रेरणा के रूप में स्वीकार किया, उसी प्रकार तिलक भी स्वराज्य के माध्यम से देश में धर्मराज्य की स्थापना करना चाहते थे। तिलक ने धर्म के व्यापक और शाशवत पक्ष को स्वीकार किया और धर्मराज्य को एक ऐसी प्रणाली के रूप में प्रस्तुत किया जिसमें शासक और शासित दोनों सक्रींण भावना से ऊपर उठकर नैतिक उदेश्य के प्रति समर्पित हो जाए। बाल गंगाधर तिलक भारत की जनता को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाकर स्वराज्य के नैतिक के उद्देश्य को प्राप्त करना चाहते थे।

3.राजनीतिक आंदोलन के प्रभावशाली साधनों का समर्थन : - बाल गंगाधर तिलक ने उदारवादियों द्वारा अपनाए जा रहे साधनों “अनुनय-विनय” “आग्रह”और “विनम्र आलोचनाओं” की प्रभावहीनता का अनुभव किया।
उन्होंने राजनीतिक आंदोलन में जाकर जनता की संघर्ष शक्ति के महत्व को पहचाना। उन्होंने ऐसे साधनों को अपनाने पर बल दिया जिसके माध्यम से जनता शासन का चलाए जाना असंभव दे।
तिलक का व्यक्तित्व वैचारिक उत्कृष्टता और चारित्रिक दृढ़ता का विलक्षण उदाहरण था। यद्यपि अपने समय में उदारवादियों से उनका गंभीर मतभेद था। तिलक स्वराज प्राप्ति हेतु उदारवादियों द्वारा अपनाये गये दृष्टिकोण और साधनों से सहमत नहीं थे। वे दबाब की राजनीति में विश्वास करते थे। तिलक को समान रूप से उदारवादियों, राष्ट्रवादियों और जनसामान्य का असीम स्नेह और सम्मान प्राप्त हुआ था। उनके राजनीतिक प्रतिद्वंदी गोखले उनके प्रति गंभीर व्यक्तिगत सम्मान रखते थे। तिलक ब्रिटिश साम्राज्य को कट्टर शत्रु मानते थे।तिलक ने अपने ग्रंथ "गीता रहस्य" में गीता के

कर्मयोग की मौलिक और प्रमाणिक व्यक्तित्व की ही गीता के कर्मयोग को उन्होंने अपने चिंतन और आचरण में पूरी तरह ढाल लिया। गीता द्वारा प्रतिपादित कर्मयोग की एक नई व्यख्या जो पूर्णत: मौलिक ही नहीं, प्रामाणिक भी थी। उसके अनुसार न उन्होंने स्वयं निस्वार्थ भाव से देश की सेवा किया वरन् उनके महान व्यक्तित्व से प्रेरित होकर उनके अनुयायियों ने भी देश की सेवा का यही मार्ग अपनाया। जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें ,"भारतीय राष्ट्रवाद का जनक" घोषित किया।